कर्पूर आरती

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि ॥

कपूर के समान जिनका गौर वर्ण है,
जो सर्पों के स्वामी, भुजगेन्द्र [शेषनाग] को हार की तरह अपने गले में पहने हुए हैं,
वे करुणा के अवतार हैं और समस्त संसार के सार हैं।
भवानी [पार्वती] के साथ सबके हृदय-कमल में सदा निवास करने वाले
उन भगवान शिव को मैं नमस्कार करता हूँ।

कर्पूरपूरेण मनोहरेण सुवर्णपात्रोदरसंस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह सङ्गतेन नीराजनं ते जगदीश कुर्वे ॥

हे जगदीश, सुवर्ण-पात्र के मध्य रखे,
जगमगाती ज्योति व कपूर से पूरित मनोहर दीपक से
मैं आपका नीराजन यानी आपकी आरती करता हूँ।

©२०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।